रूहानी बाप बेहद का, बेहद रूहानी बच्चों प्रति। देखो एक–2 अक्षर अच्छी तरह से समझो। गाया जाता है कि एक–2 अक्षर, एक–2 वर्शन या एक–2 रत्न ज्ञान का ये लाखों रुपये का है। बाप ने समझाया बहुत दफ़ा कि इनको रूप–बसन्त भी कहते हैं– आत्मा को, परमात्मा को; क्योंकि रूप है। मनुष्य समझते हैं कि रूप नहीं है, नाम–रूप नहीं। रूप है। शिवबाबा है। फिर उनमें ज्ञान का सागर है। उनमें ज्ञान है, जिस ज्ञान के लिए ही गाया जाता है कि ज्ञान से सद्गति होती है। ज्ञान धन है। ज्ञान को पढ़ाई भी कहा जाता है। पढ़ाते भी हैं ना बच्चे। उसको भी ज्ञान कहा जाता है। ये देता कौन है? रूहानी बाप। अंग्रेजी में कहा जाता है 'स्प्रिच्युअल फादर' और आत्मा को कहा जाता है 'स्प्रिच्युअल बच्चा', 'रूह', 'आत्मा'। तो आत्माओं को (.. .), आत्माएँ बहुत भटकीं भक्तिमार्ग में, ये जानते हैं। क्यों भटकते हैं भक्तिमार्ग में? बाप को मिलने के लिए, भगवान को मिलने के लिए। तो ढूँढ़ते हैं भक्तिमार्ग में। पता नहीं है उनको। अगर समझते भी हैं कि भगवान एक है, ऊपर में है, शिव है, तो भी धक्का खाते रहते हैं, भटकते रहते हैं, जैसे कोई तवाई/बेगाने होते हैं ना। भक्तिमार्ग में तवाई भटकते रहते हैं। ये पार्ट है इनका भटकने का। तो बाप आ करके सब बात समझाते हैं बच्चों को कि हे बच्चों, रूहानी बच्चों, तुम तो अविनाशी बच्चे हो ना, रहने वाले भी हो घर, जहाँ से तुम आते हो यहाँ पार्ट बजाने। बहुत दूर देश में रहने वाले हो। वहाँ से आते हो यहाँ पार्ट बजाने के लिए चोला ले करके। इस नाटक का या ड्रामा का नाम ही पड़ा हुआ है– हार और जीत का खेल, समझा बच्चे! सुख और दुःख का खेल। अच्छा! अभी तुम बच्चे तो जानते हो ना कि शांतिधाम के हम रहने वाले, सभी आत्माएँ हम शांतिधाम के रहने वाले। देखो ऐसे कोई भी आपस में नहीं बैठ करके कहेंगे या समझाएँगे। बाप कहते हैं कि हम और तुम बच्चे सभी, जो पार्ट बजाने वाले हैं, सब रहने वाले हैं शांतिधाम में। उसको शांतिधाम भी कहते हैं, निर्वाणधाम भी कहते हैं, वानप्रस्थ भी कहते हैं। ये सभी उस धाम के हैं। तो ये तो पहले निश्चय करो अच्छी तरह से कि हम हैं शांतिधाम के रहने वाले। हम आत्माओं का स्वधर्म है ही शांत।..हम बिन्दी रूप समान हैं और पार्टधारी हैं और उस बिन्दी में हमारा पार्ट अविनाशी है। कभी वो पार्ट विनाश नहीं होता है। कौन–सा पार्ट है हमारा, जो तुम बैठ करके समझते हो। दूसरे की बात ही क्यों करें! तुमको समझाते हैं, पढ़ाते तुमको हैं ना। जब कोई बैठ करके पढ़ते हैं बी०ए० में। तो वो पढ़ते हैं बी०ए० में, वो दूसरे क्या पढ़ते हैं, वो तो पढ़ते हैं ना, उनका क्यों चिंतन करना चाहिए। दूसरे दुनिया में भक्ति करते, क्या भी करते, उसका तुम..क्यों चिंतन करते हैं? तुमको निश्चय है कि बाप आ करके भगवानुवाच। तो भगवानुवाच भी एक दफ़ा होगा ना, घड़ी–2 तो भगवानुवाच नहीं होगा। भगवानुवाच होता ही है बस संगमयुग पर। फिर भगवानुवाच होता ही नहीं है, न भगवान बैठ करके पढ़ाते हैं, न भगवान बैठ करके पढ़ाय करके मनुष्य से देवता बनाते हैं। बस, एक ही बार, समझे ना और ये जानते हो ना कि कोई भी मनुष्य को मनुष्य से देवता बनाय नहीं सकते हैं। कोई भी सुखधाम का मालिक वा शांतिधाम का मालिक बनाय नहीं सकते हैं; क्योंकि हर एक चीज़ एक बार। देखो अभी देखो जो कुछ भी होता है, अभी बैठा हुआ है ये राधाकृष्णन, तो बस राधाकृष्णन... 5000 बरस के बाद फिर राधाकृष्णन प्रेजीडेंट बनेंगे। बस फिर कभी भी (...), जो भी फिर ये है सभी राधाकृष्णन के राज्य में, जो कुछ भी हैं सीन–सीनरी सारी दुनिया की, फिर 5000 बरस के बाद। तो..ड्रामा को भी तो समझ जाना है ना बच्ची। अच्छा! अगर बच्चियाँ बुड्ढियाँ–2 इतना नहीं धारण कर सकती हैं, तो उनको सिर्फ कहा

जाता है– तीन बात तो याद हैं ना– शांतिधाम के हम आत्माएँ रहने वाले, फिर हम आते हैं सुखधाम में सुख भोगने के लिए, पीछे आधा की दुनिया, जब आधी दुनिया पुरानी होती है तब आते हैं, रावण राज्य शुरू होता है। तब पीछे थोड़ा–2 विकारी बन जाते हैं। पीछे बहुत विकारी बनते–2 दुःखी हो जाते हैं। पीछे इसको कहा ही जाता है–दुःखधाम। जब दुःखधाम की आयु पूरी होती है, तब बाप बोलते हैं– मुझे आना पड़ता है, फिर तुमको सुखधाम में ले जाने के लिए। सीधी बात बताते हैं ना। इसमें तो कोई तकलीफ तो नहीं ना। ये अपने से बात (...)– हम आत्माएँ हैं शांतिधाम के रहने वाले। तुम, जिसको बाप बैठकर पढ़ाते हैं। ये ज्ञान तुम्हारे लिए है ना, दूसरे के लिए तो नहीं है ना। नहीं, जो आएगा उनके लिए है। जो बाबा के पास आएगा उनके लिए। जो बाबा के पास आएगा वही आ करके बाप से वर्सा पाएगा। कहाँ का? स्वर्ग का। जितना पढ़ेगा, जितना पढ़ाएगा, जितनी मेहनत करेंगे उतना फल पाएँगे। अभी समझा ना बच्चे। क्योंकि सतयुग और त्रेता, सूर्यवंशी और चंद्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें कोई लाखों नहीं, करोड़ों मनुष्य आ करके ये बाप से सीखेंगे, कुछ–न–कुछ समझें(...)। किन्तु एक थोड़े ही है। अभी तुमने तो 108 (...)। तो 108 से फिर जभी जास्ती तैयार हो जाएँगे ना तो फिर और 108, जाएगा बढ़ता जाएगा। वो ये मद्रास के तरफ, वो ये इस तरफ में, फलानी तरफ, सब तरफ में तुमको जाना होगा। जा करके तुमको समझाना होगा। फिर अखबारों में भी पड़ेगा। जहाँ–तहाँ होंगे जो भी, पाकिस्तान में भी होंगे, तो भी ये जो अखबारों में पड़ेगा ना और ये जो पत्रे निकलेंगे, अखबारों में छपगेंगे, चित्र छपेंगे, वो वहाँ बैठे भी ज्ञान से लेंगे। ये लिखा हुआ है, बाप को याद करना है; क्योंकि गीता तो सब जानते हैं ना। सारी दुनिया में गीता का प्रचार है। उनमें ये दो अक्षर हैं–मन्मनाभव, मद्याजीभव यानी बाप को याद करो तो तुम पावन बन जाएँगे।...पतित–पावन ना, पावन बन जाएगा और फिर पावन दुनिया में (...)। तुम लिखते भी हो ये सभी। तो ये लिखत जो अखबारों में पड़ेगी ना, उनसे भी बहुत ही ब्राह्मण बनेंगे। जहाँ–2 बैठे होंगे, जहाँ होंगे; क्योंकि यहाँ तो नहीं आकर सब पढ़ेंगे ना बच्ची। तो अखबार से भी बहुत ही समझ करके (...); क्योंकि ज्ञान बहुत सहज है बिल्कुल। बाप कहते हैं मुझे याद करो, और कोई को भी याद मत करो। मुझे याद करो और अपने वर्से को याद करो, बस। तो ये तो बहुत सच्चे अक्षर हैं ना बच्चे; क्योंकि बाप एक है और वही पतित–पावन है और उसी बाप से ही वर्सा मिलता है। तो जिनको वर्सा मिला हुआ होगा सो तो लेंगे तो ज़रूर ना बच्चे। तो सब तो कोई यहाँ तो नहीं हैं हिन्दुस्तान में। अरे बड़े–2 विलायतों में, पाकिस्तान में कितने हैं! ढेर–के–ढेर हैं। लंदन में कितने हैं? ढेर–के–ढेर हैं, बहुत जगह में हैं। ये सभी अखबार में करेंगे(पढ़ेंगे)। नहीं तो कैसे? विचार–सागर–मंथन करना चाहिए ना–कैसे इतने बनें? पर अभी टाइम तो बहुत पड़ा है ना। तो ये सभी दिन–प्रतिदिन वृद्धि को पाते रहेंगे और जो देरी से आएँगे, ये तो तुम समझते हो कि बरोबर देरी से (...), फिर उनको खूब पुरुषार्थ करना पड़ेगा। पीछे जितना जो पुरुषार्थ करेंगे वो अपनी प्रजा में वो आ जाएँगे। स्वर्ग में तो ज़रूर आएँगे ना बच्चे; क्योंकि स्वर्ग में तो फिर भी सुख तो है ना। यहाँ तो बहुत दुःख है ना बच्चे। तो देखो, वो शांतिधाम,सुखधाम,दुःखधाम। अभी फिर ये तो बना–बनाया है। जितने स्वर्गवासी होने वाले हैं वो बनेंगे ज़रूर। इसमें ऐसे न हो सकता है, कोई एक का भी कोई फ़र्क पड़ जावे, होगा नहीं; क्योंकि बाप आए हैं, तो भारतवासी जो स्वर्गवासी पहले–2 थे, वो सब स्वर्गवासी बनेंगे। जो फिर शांतिवासी बनने वाले हैं वो सब शांतिवासी बनेंगे। वो फिर अपना पार्ट बजाने आते रहेंगे, आते

रहेंगे। तो बच्चों को क्या करना है जबकि सन्मुख हैं, होते जाते हैं? ये सुखधाम को, शांतिधाम को याद करना है। घर को याद करना है। नाटक पूरा होते हैं। बाप को और घर को याद करना है। बाप को और घर को दोनों को; क्योंकि बाप कहते हैं–मुझे याद करो तो घर में पहुँच जाएँगे। समझे ना! घर के लिए ही तो इतने सब जो मत्थे मारते हैं ना बच्चे, जो भी संन्यासी वगैरह, वो सभी घर के लिए मत्था मारते हैं; सुख के लिए मत्था नहीं मारते हैं; क्योंकि सुख के लिए मत्था मारने के लिए कोई शिक्षा देने वाला है नहीं। बाकी शांतिधाम में जाने के लिए ये सभी सिखलाते हैं। समझा ना! ये संन्यासी लोग सुख को नहीं मानते हैं। वो सुख कहते हैं काग विष्ठा समान सुख है। इसलिए सबको ऐसे ही बताते हैं, तो मुक्ति ठीक है; सुख ठीक नहीं है। सुख तो है ही नहीं; क्योंकि शास्त्रों में भी ढेर दिखला दिया है कि अरे कृष्ण को, उनको भी दुःख, सर्प ने डंसा, काला हो गया, चलो। उनको भी डर, उसके बाप को कि कोई उसको मार न डाले तो उनको भगा कर ले गए। तो वहाँ भी तो ऐसे ही दिखलाते हैं ना बच्चे। तो वो तो सभी भक्तिमार्ग की झूठ मार्ग है। भक्तिमार्ग को कहा जाता है–झूठ मार्ग; क्योंकि झूठ खण्ड तो झूठ मार्ग; सचखण्ड तो सच मार्ग। तो सच मार्ग बाप आ करके बताते हैं। बाकी जो भी मनुष्य मात्र हैं, ये जो भी मुक्ति वा जीवनमुक्ति के लिए (...)। ये तो धंधेधोरी की तो बात नहीं है ना। ये तो है ही मुक्ति वा जीवनमुक्ति (के) लिए। ये जो मनुष्य मत्था मारते हैं, उनको ये पता ही नहीं पड़ता है–हम क्यों इतनी यात्रा करता हूँ। वो बोलते हैं ये रस्ता है भगवान से मिलने का यानी वापस अपने घर जाने का। बाप घर रहते हैं ना। बाप आकर...कहते हैं कि तुम देखो कितने बेसमझ बन गए हो। ढेंढर भी बेसमझ हुए ना। ट्राँ–2 करते हैं, उसमें उनको फायदा ही क्या होता है। ये भी उनकी रस्म–रिवाज़ तैसे भक्तों की भी रस्म–रिवाज़– झाँझ बजाना, ये करना, यहाँ धक्का खाना, यहाँ धक्का खाना, पानी में कूदना, देखो कितनी मेहनत करते! भला भक्त किसलिए इतनी मेहनत करते हैं? तो ज़रूर कहेंगे– भगवान के साथ मिलने के लिए। भक्ति करते हैं भगवान के साथ मिलने के लिए। तो भगवान के साथ क्या भगत जा करके मिलेंगे या भगवान को ही आना पड़े? पतित तो आत्माएँ जा नहीं सकती हैं। तो बाप बैठकर समझाते हैं–मुझे आना पड़ता है। तुम बच्चे कभी भी वापस नहीं जा सकते हो, सिवाय मेरे। मुझे ही कहते हैं–सुप्रीम गाइड यानी ले जाने के लिए एक गाइड बाप। वो आ करके यहाँ सबको साफ करके, शुद्ध कर–करके, सभी आत्माओं का एक गाइड। यहाँ जाते हैं तो बहुत गाइड होते हैं ना। पण्डे कितने होते हैं! ये एक पण्डा है। कि तुम भी पवित्र बनते हो तो तुम भी उस मुख्य पण्डे के पिछाड़ी दौड़ते हो। सबको सिखलाते रहते हो कि पवित्र बनो तो साजन के साथ पिछाड़ी में चले जाएँगे सब। वो आए ये साजन, देखो साजन भी कहा जाएगा ना, कि शृंगारते हैं। क्यों शृंगारते हैं ये ज्ञान से, रत्नों से? तुमको पटरानी–महारानी बनाने। तो गीता के लिए भी कहते हैं ना–कृष्ण सत्यभामा, ये फलानी जांबवंती, ये फलानी को भगाया। ....सृष्टि को आधा कहो तो भई आधा, भई चौथा कहो। ऐसे कह सकेंगे, अभी भई आधा पुरानी हो गई, अभी मुन्ना पुरानी हुई है, अभी सारी पुरानी हो गई है। उसमें कोई हिसाब ही नहीं है। तो बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं खास करके। अभी ये तो समझ जाते हैं अच्छी तरह से बड़ी–2 बातें भी, बुड्ढियाँ नहीं समझती हैं। तो बुड्ढियाँ के लिए भी बाबा ने बड़ा सहज कर दिया कि बुड्ढियाँ, अभी अपन को आत्मा तो समझो और बाप कहते हैं मुझे याद करो। देह का ये सभी छोड़ करके अपन को आत्मा समझ करके; क्योंकि प्योर बनेंगी ना तभी उड़ेंगी, नहीं तो उड़ नहीं

सकेंगी। फिर सज़ा खाएँगी। जाना है ज़रूर वापस; परन्तु सज़ा खाकर और पद भ्रष्ट हो जाएगा। जितना याद करेंगी इतना सज़ा कम मिलेगी, पद ऊँचा मिलेगा। बस, दो बातें याद कर देवें। तीसरी बात कोई थोड़े ही बाबा बताते हैं। दो बात– अलफ और बे, बाबा और उनकी बादशाही। तो सिर्फ बताते हैं कि याद करो अच्छी तरह से। ये फुर्णा रखो, ओना रखो। अभी क्या करें, याद करते हैं तो माया का तूफान आ जाता है। हमको कैसा भी करके याद करना है। ये माया दुश्मन है, ये हमारे को विघ्न डालती है। अच्छा, हम फिर भी बाबा के, फतक–2 करके फिर भी याद ... जाता हूँ। बाबा कहते हैं कि तुम्हारे से(को) ये माया तूफान लगाएगी, तुमको गंद में डालेगी, कचरे में डालेगी, क्रोधवश करेगी; ...तुम क्रोध–व्रोध कुछ नहीं करना। बाप कहते हैं ना, कभी–2 संन्यासी दृष्टान्त देते हैं– दो पहाड़ियाँ बैठ करके लड़ती हैं तो एक जाती है गुरू के पास– ये मेरे से लड़ती है। बोलता है–लड़ती है, अच्छा मैं तुमको ये देता हूँ ताबीज़...। जब वो बात करे ताबीज़ डाल देना, तुम बात ही नहीं कर सकेगी। वो बड़–4 करके चुप हो जाएगी। अभी वो तो एक दृष्टान्त चरिया–खरिया। पर बाप फिर भी कहते हैं–जभी भी कोई भी क्रोध करे ना, तुम शांत–हर्षित होकर बैठ जाओ। भले गुस्से में आ करके एक धक...फलाना मार कर चले जावे, चलो; क्योंकि स्त्री–पुरुष का झगड़ा लगता है विकार के लिए। तो ऐसे युक्तियाँ बताते रहते हैं। कोई हर्जा थोड़े ही है। .....तुमको मारा, अच्छा पड़ा– शिवबाबा, हाय शिवबाबा, राम–3 नहीं, हाय शिवबाबा। मुक्की लगी 'हाय शिवबाबा', चमाट लगी 'हाय बाबा', वो पत्थर मारा 'हाय बाबा'। अंत मते सा गत। तुम शिवबाबा को याद करती हो, (दूर) एकदम चली जाएंगी। अभी ये तो हिम्मत की बात है ना, भूलना तो नहीं चाहिए ना कुछ भी। कोई को भी कुछ भी नहीं। हाय शिवबाबा! हमको मारते हैं विख के लिए। आजकल मारते ही हैं विख के लिए। समझा ना! बाकी तो बाहर में जो झगड़े–वगड़े रहते हैं, वो तो इनका संभाल करना है। बहुत ही लड़ते हैं, आदमियों को ज़मीन–टुकड़ी के लिए भी एक/दो को मार डालते हैं। लठ ले आते हैं एक/दो से लड़कर मरते हैं बहुत। बहुत झगड़ा है। इन सब बातों से बच्चों का कोई काम नहीं है। बच्चों का काम है हमको शिवबाबा को याद करना है, कोई भी हालत में। वो है बहुत फुर्णा। तो हम पतित से पावन बन जावें, तमोप्रधान से सतोप्रधान। बच्ची, मूल बात ये है। तो जब ऐसे बाप को याद करेंगी, तो वर्सा भी याद ज़रूर आएगा। बाबा–3 अंदर याद आता है ना, तो बाबा का वर्सा नहीं याद आता होगा? देखो ये बच्चे लोग बैठे हैं, अंदर में बैठे हैं ना। बच्चा है यहाँ बैठे हैं, बाप भी वहाँ बैठा है घर में। अच्छा..... बच्चे जानते हैं कि ये हमारा बाप है, इनकी(इनसे) हमको वर्सा मिलने का है और वो अंदर में आत्मा जानती है, उनको मुख से नहीं बोलना पड़ता है। अंदर में सब जानती है, पीछे मुख में आता है। पहले अंदर में बात आती है, पीछे मुख से निकलती है। तो यहाँ तुम बच्चों को अंदर में बात आनी होती है, बस। मुख से किसको समझाने के लिए तुमको (...)। बच्ची, तुम्हारी खुशी है अति इन्द्रिय, खुशी में अंदर– वाह! बाबा मिला है! बाबा को याद करने से हम स्वर्ग का मालिक! वो इतना बनेंगे हम! हम स्वर्ग के परिज़ाद जा करके बनेंगे! हम 21 जन्म के लिए, अभी कभी भी दुःख का नाम, 21 जन्म तो क्या; परन्तु बाबा कहते हैं कि 40/50 जन्म तुम लोग दुःख नहीं भोगते हो। बस थोड़ा–2 पीछे आते हैं। अभी तो बहुत हैं ना बच्चे; क्योंकि सुख का हिस्सा जास्ती हो, तब तो कहें कि बाबा ने जो नाटक रचा है, भई सुख इसमें जास्ती है। अगर सुख भी इतना है, दुःख भी इतना है, तो इसमें फायदा ही क्या! नहीं, सुख जास्ती है; क्योंकि जानते हो

ना कि बरोबर 21 जन्म के बाद हमारे पास धन बहुत होता है। समझा ना! ये तो पीछे आते हैं। इस्लामी लोग वहाँ आते हैं, कोई लड़ने वाला थोड़े ही होते हैं। ....ये तो जब ये बड़े होवें, लश्कर होवे, करोड़ों होवें तब वो चढ़ाई करे। समझा ना! पीछे सो भी। अभी मैमंडों वालों ने इन्होंने लड़ाई की थी। सो भी कितना बरस हुआ? थोड़ा ही बरस हुआ, जो इन्होंने आ करके छीनी है। जब विकार में ये आपस में भी लड़ने लग गए हैं, ये यहाँ का राजा और महाराजा, इन लोग का आपस में, तभी उनको चांस मिली है, जो वो आए हैं। ये भावी ड्रामा की। नहीं तो उसके पहले तो यहाँ बहुत सुख–शांति। कोई भी चढ़ाई भी नहीं करते थे। सबको राजाओं को अपना–2, बड़ी–2 राजाई थी, बड़े–2 खुश थे। इतना दुःख नहीं था। धन, ये अन्न। बाबा अनुभवी तो (है) ना। अन्न हमने बेचा है 10 आना मण बाजरी, 12 आना मण, 11 आना मण ये ज्वार। कनक भी होगी; क्योंकि वहाँ कनक नहीं खाते थे जास्ती। पर होती क्यों नहीं थी! चलो बहुत करके रुपये की होगी। रुपये मण, क्या समझते हो! इसके आगे क्या सस्ताई होगी तब। हिसाब तो करना चाहिए ना बच्चे। जब हम होंगे ही थोड़े यहाँ सतयुग में, तो अन्न की परवाह होगी? नहीं, एवरीथिंग नई, कनक(गेहूँ) कैसी फर्स्टक्लास होगी। पीछे चीज़ सड़ती जाती है ना। कनक कैसी अच्छी होगी! सब सतोप्रधान फर्स्टक्लास। तो उस स्वर्ग में तुम चलते हो। अभी स्वर्गवासी बन रहे हो। बाकी स्वर्गवासी बन रहे हैं, तो ज़रूर स्वर्ग को याद करना पड़े ना; परन्तु पहले–2 स्वर्ग में तो नहीं जाना ना, पहले तो घर जाएँगे ना। घर जा करके, थोड़ा थक दूर कर–करके, घर तो ज़रूर जाना ना। पीछे नया मिलेगा। घर जानेंगे(जाएँगे), तब जब आएँगे, तब हम नई दुनिया में आएँगे। पीछे हमारा शरीर भी, ये जो पाँच तत्व हैं ना, तमोप्रधान हैं बिल्कुल ही अर्थात् पतित हैं, ऐसे समझो। ये पतित शरीर, तो देखो आत्मा भी पतित तो शरीर भी पतित। सोना भई पक्का सोना, तो ज़ेवर बनेगा तो पक्का। अच्छा, सोने में खाद पड़ेगी तो ज़ेवर भी ऐसे ही बनेगा। तो अभी तमोप्रधान आत्मा है तो ज़ेवर भी ऐसा ही है, शरीर भी ऐसा ही है, रोगी देखो और वहाँ कभी रोगी शरीर बनेगा ही नहीं; क्योंकि सतोप्रधान तत्वों का बनता है। तो ये तो समझ की बात है ना बच्चों को। क्या करें, यहाँ बच्चों को समझाते रहते हैं। पीछे वहाँ घर जा करके सब भूल जाते हैं। कितनी बातें अच्छी, यहाँ कितना बाबा खुश करते हैं समझा–2 करके। भर–2 करके सागर बादलों को बहुत गोद में ले आते–जाते हैं। फिर वो जभी जाते हैं वहाँ, कोई बरसते हैं, कोई नहीं बरसते हैं, वहीं डाँवाडोल हो जाते हैं। नहीं तो यहाँ से जो भी जाते हैं, बहुत खुश हो करके। बोलते हैं– मधुबन में तो मधुबन है। बाबा की जो मुरली बजती है, एकदम रिफ्रेश कर देती है, नई–2 प्वॉइंट्स से हमको भर देती है। खुशी का पारा चढ़ता रहता है। तो खुशी के मारे कोई डांस करते हैं ना। डांस वहाँ करना है। यहाँ तुमको ट्रॉयल कराई जाती है। ध्यान में भेज करके तुम लोग यहाँ डांस करते हो। अभी वो बंद कर दिया है। नहीं तो आगे– ये कंवल बनाना है, भई चलो बाजा बजाओ और उठेगा, डांस करेगा। पीछे झट डांस कर देते थे। पीछे इसको जब मनुष्य जादू समझ लिए, तो बंद कर दिया। बोला–ये जादू नहीं तो ये क्या है भला? समझा ना! वाह! मनुष्य भक्तिमार्ग में जब सिर कटे तभी उनको साक्षात्कार हो। एक मीरा, एक नारद, एक फलाना, उनको साक्षात्कार होते थे। बड़ी नौधा भक्ति करने से वो साक्षात्कार (...)। यहाँ कुछ भी नहीं। बस, सोकर उठते हैं, डांस करने लग पड़ते हैं। किसको देखते भी नहीं, कृष्ण की भक्ति भी नहीं करते हैं, जो भई कहें– अच्छा, कृष्ण की भक्ति करते हैं, देखो साक्षात्कार होते हैं, वैकुण्ठ में चले जाते हैं। कुछ भी

नहीं। सो जाते हैं, उठते हैं तो डांस करने लग पड़ते हैं, ये क्या है! तो इसलिए बंद कर दिया बाबा ने। नहीं तो बहुत साक्षात्कार होते थे बच्चों को। तो क्या करें, वो जो गाया जाता है ना कि एक टंगे के गाँव में, दो टंगे वाले को भी ...। तो बाप को भी देखो, ऐसे ही मनुष्यों में वो छिपाय देना होता है; क्योंकि देखते हैं कि उफ! भगवान ही कितने बन बैठे हैं यहाँ। कोई अपन को विष्णु कहलाते हैं, कोई लक्ष्मीनारायण कहलाते हैं, कोई रामसीता, डबल एकदम। वो है वहाँ सीता और राम अलग–अलग। इन्होंने दोनों नाम भी अपने ऊपर रख दिया है। लक्ष्मीनारायण ये नाम एक मनुष्य का। अभी कहाँ वो श्री लक्ष्मी, श्री नारायण वैकुण्ठ की(के)! कहाँ ये लक्ष्मीनारायण नर्कवासी! तो ऐसा थोड़े ही नाम रखाना चाहिए वास्तव में। कहाँ लक्ष्मी–नारायण अलग–2, कहाँ ये नारायण नाम उनका। तो बोलते हैं– देखो, इनको कोई पता भी नहीं पड़ते हैं। ये नारायण कहाँ, वो नारायण स्वर्ग का मालिक! कहाँ ये नर्कवासी नारायण! तो यहाँ सभी हैं ही नर्कवासी, सब साधु,संत,महात्मा। इसलिए तो दिखलाते हैं ना सीढ़ी में– नर्कवासी, स्वर्गवासी। ये नर्क ऐसा क्लीयर। तो बच्चों को इतना समझाते हैं तो जब चित्र बनाते हैं तो याद नहीं पड़ते हैं। कोई उनको मदद नहीं एक/दो को करते हैं। सब कोई अपने धंधेधोरी में यहाँ–वहाँ भटकते–फिरते हैं, सर्विस में अटेंशन नहीं देते हैं। नहीं तो अटेंशन देना चाहिए। ये चित्र बन रहे हैं। रात को, सुबह को–अब क्या चित्र बनाना चाहिए, कौन–सा चित्र बनाना चाहिए, उसमें क्या–2 लिखना चाहिए, ये करना चाहिए। झट जाकर, चित्र बनते हैं, उनको जाकर राय देवे या चिट्ठी लिख करके भेजें– बाबा, ऐसे–2 चित्र में ये बनाने से, मेरी राय कुछ अच्छा होगा। तो भले सब कोई लिख देवें– ये बनाने से ये अच्छा होगा, ये बनाने से ये अच्छा होगा। तो बनाते जावें। ऐसे भी करते हैं कोई–2, ऐसे नहीं, नहीं करते हैं। सीढ़ी भी तो इन बच्चों ने बनाई है, अपनी बुद्धि से। बाबा ने नहीं कहा था कभी सीढ़ी बनाओ। तो सीढ़ी बनाई तो बाबा खुश हुआ।...ये तो आइडिया बहुत अच्छी। ये सीढ़ी है अखबार में एक में। ये सीढ़ी कहाँ से आई, इन्होंने कहाँ से निकाली? वो गीता है उन परमानन्द की, उनमें सीढ़ी लगी हुई है। उनमें से इन्होंने आइडिया ...। तो वो तो पढ़ते रहते हैं ना। किताब निकालते हैं, फलाना पढ़ते हैं। नहीं तो है तो गीता अपने पास भी। किसका ध्यान नहीं गया। वहाँ किसका ध्यान गया– सीढ़ी। ये सीढ़ी तो 84 जन्म की बहुत (...), उसने कोई 84 जन्म की सीढ़ी नहीं निकाली थी। उसने ऐसे ही, वो क्या जाने मुर्दा सीढ़ी बनाने! तो इनसे सीढ़ी उन्होंने बनाय दी। सीढ़ी बनाय दी, ...चीज़ अच्छी है– 84 जन्म की सीढ़ी। तो इनको इम्प्रूवमेण्ट करते रहें। तो बच्चों को भी दे करके इम्प्रूवमेन्ट...। तो ऐसे करते–2 बच्चों की बुद्धि खुलती जाती है। हर एक चित्र में, भई हाँ ये भी चित्र चाहिए। ये जो चित्र, अभी देखो श्री लक्ष्मी–नारायण का चित्र भी दिखलाया है, सतयुग से फलाने समय से फलाने समय तक। अच्छा, अब सीता–राम का भी चित्र दिखलाया है, भई फलाने समय से फलाने तक। अच्छा, फिर द्वापर से ले करके उनका भी चित्र बनाना चाहिए; क्योंकि उनमें डबल ताज है, उनमें फिर सिंगल ताज। समझे, विकारी राजाएँ, द्वापर से विकारी राजाएँ भक्ति करते हैं, पटका पड़ा है; भक्ति करते हैं, ताज (...)। ऐसे बनाया है सीढ़ी में, एक चित्र है। तो पीछे इस समय में वो भक्ति करते हैं, ताज–वाज भी नहीं है एकदम, टोपी है। समझा ना! वो लगा देना चाहिए। वो ताज भी चला गया। तो बच्चों को समझाने में सहज होवे कि भई देखो, कैसे सृष्टि 84 जन्मों में कैसे उतरती कला। ये उतरती कला। देखो कलाएँ (...)– चढ़ती कला, उतरती कला। अभी इस समय में ज़रूर सबकी चढ़ती कला यानी स्वर्ग

हो जाएगा तो सबकी चढ़ती कला। कोई स्वर्ग में, कोई शांतिधाम में। अभी ये चढ़ती कला कौन करने वाला है? अरे, महिमा करते हैं, गाना गाते हैं– भई तेरे भाने सर्व का भला, सबकी चढ़ती कला। तो बाप आकर सबकी चढ़ती कला करे ना। सबकी होनी चाहिए ना...। तो देखो, बाप आ करके सबकी चढ़ती (...), सबको सुख देते हैं और कहते भी हैं, सभी कहते हैं– हे बाबा! दुःख हरो, सुख दो, बस पुकारते रहते हैं। अभी यह किसको मालूम तो है नहीं कि सुख कहाँ मिल सकता है, दुःख कहाँ–कैसे हट सकता है। ये संन्यासी तो जानते नहीं हैं। सुख को तो जानते ही नहीं हैं, वो तो शांति को जानते हैं। तो वो कभी भी गीता नहीं सुनाय सकते हैं। अभी ये विचार की बात हुई ना। जबकि गीता में है ही– सुखधाम का वर्सा बाप देते हैं, साथ–2 में शांतिधाम भी देते हैं। अब ये संन्यासी मुर्दे कभी भी राजयोग सिखलाय नहीं सके; क्योंकि निवृत्तिमार्ग वाले हैं। अभी उनको कोई भी गीता वगैरह पढ़ने का हक नहीं है। वो तो तोते के माफ़िक जैसे पण्डित पढ़ते हैं तैसे तुम पढ़ सकते हो। अच्छा, वो क्या सुनाते हैं? गीता सुनाते हैं ना। गीता तो तुम भी पढ़ सकते हो। जो अर्थ लिखा है, वो भी बिचारे देखो बहुतों को सिखला देते हैं ना। ... श्लोक बोला और बैठ करके एक बच्ची ने (...)। अच्छा, ये तो बस, ये तो महात्मा बन गई। अरे, लाखों–करोड़ों आ करके पढ़ते हैं। लाखों पैसा छोड़के जाते हैं। अच्छा, वो पढ़ना अच्छा या बी०ए०,एल०एल०बी० और एम०ए० करना वो अच्छा? बताओ। सबसे अच्छा तो वो है ना। बस गीता एक कण्ठ की और उनका बैठ करके (...) चलो बरस लगे, दो बरस लगे, तीन बरस लगे। उस पढ़ाई में तो 5 बरस से 20 बरस, 15 बरस लगता है। इसमें तो बहुत–2 बीच की बच्ची होवे सेन्सीबुल, हाँ इन जैसी इतनी, इनको शुरू कराय दो या इन जैसी शुरू कराय दो कि तुम ये बदमान सीखो संस्कृत में। संस्कृत में तो सीख ही जाएगी। संस्कृत गीता तो वो भी सीख जाएगी। बदमान याद करो। तो वो भी तो है ना, बदमान याद है, बस बात मत पूछो, लश्कर जाते हैं उनके ऊपर। एक थोड़ी खूबसूरत हो और ये गीता का संस्कृत में हो और कुछ अर्थ भी समझावे, ... बस। ये सभी तुम्हारी कमाई, जज–बैरिस्टर घर को याद करेंगे, वो इतना कमाय लेती है। झट हमको मत्था भी आ करके कोई टेकते रहते। कितना मान होता है! अच्छा, जाओ गुरू ग्रंथ का जा करके, बैठ करके जपसाहब और ... ये थोड़ा सीख करके, एक टिकाना ले करके, मंदिर में वो रख दो एक ग्रंथ और अच्छी तरह से भभका कर... सभी आएँगे और बैठ करके ग्रंथ के थोड़े वचन। थोड़ा वो बनाया, मत्था टेकते रहेंगे, पैसा छोड़ते रहेंगे, बड़ी अच्छी कमाई का धंधा निकल जाता है, ढेर–के–ढेर। तभी तो इतने धंधे निकले हुए हैं ना। मंदिर, ये टिकाने; क्योंकि कमाई का सस्ता रस्ता। अच्छा और भी कोई को तकलीफ होवे। देखते हैं बस अभी तो हम तंग हो गए, देवाला भी मारने का समय आ गया हुआ है, अभी मैं छू नहीं सकता हूँ। अच्छा चलो, जा करके संन्यास ले लो। मत्था मुंडा और कफनी पहनी, जा करके.....। बस, सब चिंताएँ खतम कर दीं एकदम। ये संन्यासी, अरे ढेर ऐसे संन्यासी बनते हैं। जब तंग हो जाते हैं ना घर से। अरे छोड़ो...इनको, एकदम कफनी पहनी, मत्था मुंडाया, जाकर संन्यासियों के संग में पड़ा। उनके संग में कुछ–न–कुछ सीख जाते हैं– मंत्र,जंत्र,धूर–छाईं और वो बैठ करके भीख मांगते हैं, चक्कर लगाते हैं मौज में, जहाँ चाहिए तहाँ जावे। ट्रेन में भी ऐसे ही बैठ जावे तो भी चला जाएगा। उनको भी वो संन्यासियों को कुछ...उठाकर रखेगा, दूसरी ट्रेन आएगी उसमें फिर बैठ जावेगा। अलमस्त घूमते–फिरते रहते हैं, देखो। उनको क्या दुःख है! इनको तुम्हारा कितना दुख लगता है। ऐसे तो बाबा देखते तो रहते हैं ना,

सब देखते रहते हैं। ऐसे बहुत ही करते हैं एकदम। तो क्या लगा हुआ यहाँ! अभी वो तो बातें हैं– सब ठगी की और शैतानी की। यहाँ तो बाप आए हैं, वो बैठ करके कोई भी तकलीफ नहीं देते हैं। न मत्था मुंडने की बात, न कुछ भी बात नहीं। सिर्फ कहते हैं– अपन को आत्मा तो जानते हो ना। तुम आत्मा हो ना। तुम रहने वाले तो परमधाम के हो ना। कोई यहाँ के रहने वाले तो नहीं हो ना। तुम वहाँ से यहाँ आते हो। ये जानते हो कि बरोबर सृष्टि जो बढ़ती जाती है, वो आत्माएँ कहाँ से आती हैं? कहाँ से तो आती होंगी ना! यहाँ के रहने वाले तो आत्माएँ नहीं हैं ना। आत्माएँ तो परमधाम में रहने आती हैं ना। उनको कहा ही जाता है–निराकारी दुनिया। इसको कहा जाए–साकारी दुनिया। तो हम निराकारी दुनिया की आत्माएँ ठहरे ना। तो वहाँ से आते हैं ना बरोबर। आते हैं यहाँ पार्ट बजाने के लिए। तो बाप बहुत अच्छी तरह से बच्चों को समझाते हैं कि अभी नाटक पूरा होता है। अभी तमोप्रधान होने के कारण तुम (वहाँ) जा नहीं सकते हैं। बाबा आया हुआ है तुम बच्चों को सतोप्रधान बनाने। अगर श्रीमत पर न बनेंगे तो सज़ाएँ बहुत चढ़ी हुई हैं सिर पर, वो सभी खाय कर–करके फिर सब कोई अपने–2 घर चले जाएँगे। क्रिश्चियन अपने घर जाएगा, बौद्धी अपने घर, सब चले जाएँगे। बाकी स्वर्ग में यही ये देवी–देवताओं का राज्य रहेगा। अभी ये जो ज्ञान की एक–2 प्वॉइन्ट, एक भी मनुष्य दुनिया में नहीं है, भले कितना भी विद्वान हो, कोई भी नहीं जानते हैं। शांतिधाम और सुखधाम, ये है दुःखधाम। ये तीन अक्षर भी कोई नहीं जानते हैं। बुद्धि में नहीं है; क्योंकि अगर वो उठकर बुद्धि में न बोलेगा– अच्छा, शांतिधाम। ...शांतिधाम तो आने के लिए अभी 40 हज़ार बरस चाहिए। जबकि यहाँ अशांतिधाम ख़तम हो। अभी बताओ घोर अंधियारे में हो गए ना। यानी शांतिधाम जिसको कहा जाता है वापस जाने का। वो बोलता है कलियुग का अंत होएगा तब जाएँगे ना। सतयुग के आदि में ही तो थोड़ी आत्माएँ रहती हैं। तो कलियुग के अंत, अंत को कहते हैं– 40 हज़ार बरस। कोई हिसाब है? चरिये भी कोई नहीं समझ सकते हैं। अभी मनुष्य बढ़ते हैं, मान नहीं मिलते हैं। समझे ना! अभी अगर 40 हज़ार बरस हैं, तो क्या समझते हो! बिल्कुल झूठ तो बिल्कुल ही झूठ एकदम। ...सो तुम रावण पर जीत पहन करके, सारी सृष्टि को रावण के इनसे छुड़ाय लेते हो। तुम थोड़े से। लश्कर यानी वही शक्ति सेना हुई ना बच्ची। लश्कर लिया, सब तो नहीं लिया साथ में। सेना ली सो शिव शक्ति सेना तुम। तो बरोबर ये भारत को फिर स्वर्ग बना रही हो। कितनी अच्छी–2 बातें बाप समझाते हैं। बच्चों को बुद्धि में डाली जाती है। फिर भी बाप कहते हैं कि बच्चे, बाप को याद करो और वर्से को याद करो और गुप्त खुशी। ये बहुत अंदर में, जब सुबह को बैठें तब तुम बहुत खुशी में रहने चाहिए। समझा ना! भक्तिमार्ग में कोई खुशी नहीं होती है। ये ज्ञानमार्ग में खुशी होती है कि अभी बाबा आया हुआ है। बाबा को याद करने से अभी गए कि गए हम। खाली हम पुरुषार्थ करते हैं कि बाबा को याद करें तो हम सतोप्रधान बनें। नहीं तो मार–मोचरा भी खाएँगे और टुकड़ी मानी की मिलेगी। वो मोचरा भी न खाएगा, पूरा फूलका मिलेगा, सारा फूलका मिलेगा। नहीं तो मार भी खाएँगे, इतना टुकड़ा फूलके का मिलेगा। कन्नी मिलेगी, गिट्टी मिलेगी, पिचड़ी। किसको पिचड़ी, किसको थोड़ी बड़ी, किसको थोड़ी..., जितना–2 याद करेगा। तो यहाँ समझ की बात है ना बच्चे। बहुत समझने की बात है। इसलिए जितना हो सके इतना कोई भी, सब श्रीमत पर चलो। कभी कहते हैं–बाबा, धंधे में झूठ बोला। अरे, बाबा से पूछो। बाबा कहते हैं ना– भले, बस, तुम छूटे उनसे। क्यों बाबा कहते हैं कि तुम योग में रह करके, जितना रहेंगे इतना, जितना भी तुम पाप

करेगा ना, वो कट जाएगा; परन्तु सो भी ऐसे नहीं कि फिर विकार में जा करके बोलो– बाबा, हम योग में रहते हैं। नहीं–2, विकार में तो जाना ही नहीं है। ऐसे वो शैतानी नहीं रखना दिल में कि बाबा, अच्छा, एक दफा विकार में जाएगा, फिर योग में रहते हैं। नहीं–3, विकार में अगर जाएगा तो मरे एकदम। विकार...पहली बात है। तुम ऐसे प्रतिज्ञा करो। ये है ना, कोई उसके लिए थोड़े ही कहा है कि किसके साथ क्रोध–व्रोध न करना, आओ रखड़ी बाँधो। नहीं, रखड़ी बंधन बताई गई है–पतित नहीं बनने का, विकार में नहीं जाना है। देखो, यहाँ भी ऐसे कहते हैं ना। इनसे लिखा कर लिया है कि हम विकार में नहीं जाएगा? रखड़ी बँधी है? ऐसे थोड़े ही बाबा कभी कहते हैं– इसने रखड़ी बंधाई, क्रोध नहीं कभी करेगा? नहीं, है ही, मनुष्य कहते ही हैं– हमको पतित से पावन बनाओ। यानी हम जो पतित ये मूत पीते हैं, इनसे हमको बचाओ। तो वहाँ तो मूत होता ही नहीं है। अच्छा चलो बच्ची। ये ठका होती है... जब सात बजा ना, घण्टी बजी जैसे, कि टाइम पूरा हुआ। खुशी का झलका उठना चाहिए– बाबा! हमको पढ़ा रहे हैं! बाबा, हमारा बाबा भी है, सबका बाबा है और पढ़ा रहे हैं! सबको पढ़ाने वाला... और फिर सत्गुरू है, सबको साथ में ले जाएगा! वो मिला हुआ है बाबा और हम स्वर्ग में जाते हैं! तो अंदर में कितनी खुशी होनी चाहिए! सिर्फ याद करना। सुबह को उठ करके याद करना। जितना हो सके इतना याद करना। याद करना माना जमा करते हैं, कमाई जमा करते हैं। जितनी चाहिए इतनी कमाई जमा करो। और बाबा तो राय देंगे ना। या कहेंगे– बाबा, आशीर्वाद करो, तो हम याद करें आपको। हम आशीर्वाद करें ...फिर याद करेंगे! तो सबको ही आशीर्वाद करें, याद करके सब वैकुण्ठ में पहले नंबर में चले आवें। लो बच्चे। पूछना है, आए हुए हो, कोई भी तकलीफ हो, मित्र–संबंधियों की, फलानी तरह की राय पूछनी हो तो पूछ कर लो। बाकी पहले–ते–पहले में कुछ भी हो, कुछ भी करो, सुबह को उठ करके बाप को याद करो। कमाई करनी है ना तुम बच्चों को। बाबा कमाई कितनी सस्ती बताते हैं। जितना हो सके इतना आत्मा अपन को समझ करके बाप को याद करो, तुम्हारी बहुत कमाई होगी और जब बाप को याद किया जाता है तो ये जो वर्सा है ना, वो है ही है। बाबा माना वर्सा साथ में है। पीछे सबको है, वर्सा सबको है। कुत्ते–बिल्लों को भी है। समझा ना! उनको भी झुपड़ी कुछ–न–कुछ मिलता ही है। तो तुम बच्चों को भी कुछ... किसको राजाई, किसको क्या। अभी जितना याद करेगा बाबा को या वर्से को इतना तुमको बहुत बड़ी बादशाही मिलेगी। यहाँ क्या, घर में, विलायत में, जहाँ चाहिए तहाँ; परन्तु याद करो। जितना याद करेंगे इतना फायदा पड़ेगा। अभी इससे सस्ता क्या सौदा मिलेगा! इसके लिए इसको कहा जाता है– इतना सस्ता सौदा और कोई भी दे नहीं सकता और फिर कोई विरला व्यापारी आ करके ये सौदा लेते हैं। कोटन में कोउ, कोउ में कोउ, कोउ में कोउ। अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।